ॐ

कुरुक्षेत्र दर्पण

(सितम्बर, 1955 ई० भादों सुदी संक्रांत कन्या वि० 1912)

जिसमें

उस सरज़मीं के मुफस्सिल हालात जिसमें कौरवों-पांडवों की लड़ाई हुई थी। और इसकी सरजमीन में मरने से फूल नहीं उठाए जाते। और इसके देवधरती के नाम से पुकारते हैं। तमाम मुफस्सिल हालात तीर्थहाए जो इस सरज़मीन में वाके हैं। और इसके महातम व फल।

- उर्दू से हिन्दी अनुवाद कर्ता — बी. डी. लामसर
  सुपुत्र श्री रामानन्द लामसर, गांव फतेहपुर
  तहसील कैथल, जिला करनाल (पंजाब)
  लेखन आरम्भ दिनांक 7-10-2011 सुपुत्र पौत्री कीर्ति का १वां जन्मदिन
  — मुताबिक़ा सूरतवा —
- उर्दू लेखक — बसन्त लाल ठेकेदार महकमा पी. डब्लू. डी.
  फिरोजपुर छावनी बाजार नं.-5
- मिलने का पता — बली राम बसन्त लाल ठेकेदारान
  महकमा पी. डब्लू. डी. फिरोजपुर छावनी।
- कीमते आला व महसूल डाक — आठ आने /८

लेखक की ओर से विशेष

कुरुक्षेत्र की 48 कोसीय पावन भूमि के सभी ज्ञात / अज्ञात / लुप्त प्राय: अथवा लुप्त होने के कगार पर जा रहे तीर्थों / ऋषिकुलों के आश्रमों तथा अपनी भारतीय संस्कृति के संवाहक स्थलों के प्रति मेरी विशेष जिज्ञासा रही है। अपनी इस पिपासा को शान्त करने तथा इसमें पूर्ण सफलता के लिए एक विशेष कार्यक्रम बनाया। जिसके अन्तर्गत सब से पहले कुरुक्षेत्र सम्बन्धी प्राचीन से प्राचीन और नवीन पुस्तकें चाहे वे किसी भी भाषा में मिलीं बड़े घोर प्रयत्न व मूल्य पर प्राप्त कीं। उन्हीं पुस्तकों में एक उर्दू की पुस्तक "कुरुक्षेत्र दर्पण" बड़ी जीर्ण-शीर्ण कटी फटी अवस्था में मेरे एक मित्र से मिली। उसकी फोटोस्टेट कापी बनवाई। उर्दू मैं मामूली सी जानता था। एक हफ्ते में खुद उर्दू सीखी। पुस्तक का अनुवाद दिनांक 7 अक्तूबर सन् 2011 शुक्रवार को अपनी प्रिय

कहाँ क्या है ?

- सत नारायण स्वामी की जय । ———— पृष्ठ 2 पर
- तमहीद (दीबाचा) / INTRODUCTION. ———— पृष्ठ 4
- बयान इस बात का कि फ़ौ ज़माना तहकीकात मौका तीर्थहाए किस-किस पंडित वगैरह ने काबिज़ा की ———— पृष्ठ 6
- हाल सरज़मीन कुरुक्षेत्र लकबियाँ अर्ज़ व तूल हदूद रकबा ———— पृष्ठ
- तशरीह इस बात की कि यह ज़मीन देवधरती बनाम कुरुक्षेत्र किस सबब से मशहूर हुई। और बुनियाद इस की क्या है ? ———— पृ०
- बयान बन आला इस सरज़मीन में थी। ———— पृ०
- तफ्सील नौ नदी ———— पृ०
- नम्बर 1 मज़कूर बयान कुरुक्षेत्र तालाब वाके थानेसर ———— पृ०
- फ़ेहरिस्त तीर्थहाए कुरुक्षेत्र व तरतीब रवानगी परक्रमा। ———— पृ०

सत नारायण स्वामी की जय

इन्सान के, जिस क़दर, काम पूरा करता है जो सत नारायण स्वामी पूरा करता है। खासकर इस खाकसार को सिवाय सत नारायण स्वामी जी के, दूसरे पर भरोसा नहीं है। जिस क़दर मुश्किलात पेश आएं, वो सब उन की कृपा से पूरी हुईं। जो कुछ हासिल हुआ है, उनकी दया से हुआ है।

मैं अर्सा 11 साल खास करनाल थानेसर कमेटी में मुलाज़िम रहा और यही ख्वाहिश रही कि कुरुक्षेत्र के मुतल्लक कुछ हालात मालूम हों। कभी कुछ ज़बानी हालात मिले, मगर ऐसे तसल्ली-बख्श नहीं कि जिनको क़लमबन्द करके या छपवा कर पब्लिक की खिदमत में पेश किया जावे। इस तलाश में एक क़लमी लिखे हुए हालात बाबा श्याम जी दास साहब का असल बाकी तहसील थानेसर के पास से मिले। जिन से मैंने नक़ल करके तैयार किए, कि इसको छपवा कर पब्लिक की सेवा में पेश करूं। मगर दिगर साहेबों से सलाह मशवरा लेने में, वो हालात लिखे हुए, गुम हो गए। और महरूम रहा। ख्वाहिश दिल की दिल में ही रही। फिर वहां से कैथल कमेटी में तब्दील होकर आ गया। मगर बवजह अदम फुरसती नक़ल तैयार करके छपवा न सका। इस अर्से में बाबा श्याम जी दास साहब का इन्तकाल हो गया। और क़लमी लिखे हुए हालात मिलने मुश्किल हो गए।

बाद अज़ाँ मैं मुलाज़मत छोड़ कर फिरोज़पुर छावनी आ गया। काम ठेकेदारी शुरू किया। मगर हर वक्त यही मुराद रही कि किस तरह से वो हालात मिलें, तबा करवाऊं। अब सत नारायण स्वामी जी की कृपा से वो हालात दस्तेयाब हो गए। जो छपवा कर पब्लिक की खिदमत में पेश करता हूँ। और दस्तबस्ता अर्ज़ परदाज़ हूँ कि अगर कोई गलती व सहू हो, माफ फरमावें। मैं इस लियाकत का आदमी नहीं हूँ, जो दुरुस्ती कर सकूँ। जैसे हालात इन के तहरीर शुदा हैं वो तबा (छपवा) करवा दिए हैं। ताकि हर शख्स कुरुक्षेत्र के हालात से वाकिफ हो जावे। कि क्यों इस क़दर दूरो दराज़ के आदमी इस जगह पर अस्नान के वास्ते आते हैं। और क्या इन तीर्थों के महात्म हैं, बुज़ुर्गों से लेकर आज तक जिस के लोग पैरोकार हैं। और बाबा श्याम दास जी साहब मरहूम व खाकसार बसन्त लाल हर दो (दोनों) कस्बा कैथल जिला करनाल के बाशिन्दा खानदान कानूनगोयां से हैं।

— बसन्त लाल ठेकेदार हाल मुकीम फिरोज़पुर छावनी.

शब्दार्थ

खाकसार = तुच्छ
मुलाज़िम = नौकर
ख्वाहिश = इच्छा
मुतल्लक = बारे में
हालात = घटनाएं/जानकारियां
क़लमबन्द = हस्त लिखित
खिदमत = सेवा
क़लमी लिखे = हाथ से लिखना

महरूम = वंचित
अदम फुरसती = फरद के मुताबिक
इन्तकाल = मृत्यु
दस्त बस्ता = हाथ जोड़कर
सहू = त्रुटि-कमी
तहरीर शुदा = लिखी हुई
बुज़ुर्गों = बड़े-बूढ़े
पैरोकार = मानने वाले

तमहीद (दीबाचा / INTRODUCTION)

हिन्दुस्तान में कुरुक्षेत्र ऐसा मुकाम परस्तगाह हिन्दुआन मशहूर व मारूफ है, कि दूर-दूर के आदमी यहां आकर कर्मी मानि त्वाफ (यात्रा) इस सरज़मीन का करते हैं। और जहां-जहां तीर्थ व तालाब नामी हैं, सब जगह जाकर उनका अश्नान कारण सवाबे अज़ीम समझते हैं। ये मुकाम वैसा ही मशहूर है जैसा गया व मथुरा और हरिद्वार, कांशी व जगन्नाथ व बद्री केदार वगैरह परस्तगाह हैं। और चन्द जगह बुज़ुर्गान नाम पर दान होता है। और इसका नतीजा मसल गया के समझा जाता है। और अच्छे-अच्छे फ़िकरान जो बजा देहात में रहकर या बो इलाही इबादत में मशरूफ और अपना मरना इस ज़मीन में बाइस निजात इखरवी जानते हैं। अगरचे बहुत बड़ी-बड़ी किताबें मसल महाभारत वगैरह मुल्क का शोराहा व अक्ला और शामकीन (शौकीन) शास्त्र व गल्क, मसल कुरुक्षेत्र महातम वगैरह वासफ (हूबहू) यहां के हालात की हैं। मगर कोई फ़ेहरिस्त या नक्शा मौका हर एक तीर्थ, फ़ारसी हरफ़ों में किसी ने ऐसा तरतीब नहीं किया, कि मुख्तसराना फ़ारसीख्वाह लोगों की दरयाफ्त को कारामद हो। हरेक मोहताज़ रहबरी ब्राह्मणान है। और अक्सर ब्राह्मणान ने एक नक्शा पैदा खुद बना रखा है। और उसका मौका हरेक मौज़ा का दुरुस्त नहीं है। यह आगे का गाँव पीछे पीछे का आगे, लिख रखा है। और सूरते इमत ज़मीन बादज़ोर मुसाखत एक गाँव का दूसरे गांव से नक्शा में सही नहीं है। सिर्फ़ कयासी और नज़रन्दाज़ है।

मुझ हेचदान कालीराम वल्द चौधरी छुज्जूमल रईस सुल्तानपुर, जिला सहारनपुर को बहालत कयाम अपने ना हौदा एकस्ट्रा असिस्टेंट ज़िला थानेसर यह शौक़ पैदा हुआ। कि उर्दू इबारत व फ़ारसी हरफ़ों में वास्ते आगाही अवामके मुख्तसराना हाल और एक नक्शा इस सरज़मीन का बरुए नक्शाजात पैमायशा बन्दोबस्त तरतीब होकर तबा कराया जावे। कि नाज़रीन को फ़ायदा अज़ीम हो। और हरेक का दस्तरसी तमाम देख सकें। तवालत में हर एक की तबीयत रोका करती है। चुनांचे हमने बाज़ तमाम पंडित हरदत्त साकिन कैथल व रामलाल पण्डित साकिन पूण्डरी व चेतन गोसाईं चेला बाबा हरी गिर सेरदा वाला को, इन सब ने, बज़ात खुद परक्रमा करी है। इस किताब व फ़ेहरिस्त को तरतीब किया और इसका नाम कुरुक्षेत्र दर्पण रखा। कि हकीकत में उसका नक्शा व फ़ेहरिस्त मसल आइना के सब हाल का वाज़ह (हूबहू) है। और यह बात ज़ाहिर है कि मैं शास्त्र ख्वान और शास्त्रदान नहीं हूँ। जैसा पंडितों से और तहकीकात अवाम से साबित हुआ, वैसा लिखा। और इन्सान सहु व खता से मुज्जसम है अगर सहू व खता हो लायक माफ़ी और क़ाबले एतराज़ नहीं है।

माह सितम्बर 1855 ईसवी मुताबिक माह भादों शुरू संक्रान्त कन्या बिक्रमी सम्मत 1912 में यह खातमा पर पहुंचा। —— फ़क़त। (समाप्त) ([illegible])

शब्दों के हिन्दी अर्थ

मुकाम = जगह	बेसात इबादती = बहुत अच्छा
परस्तगाह = पूजास्थल	सवाबे अज़ीम = बहुत पुण्य (महापुण्य)
सरज़मीन = पुण्य धरती (तीर्थधरती)	हिन्दुआन = हिन्दुओं
	मशहूर = प्रसिद्ध
	मारूफ = नामी

मुल्क का शोहरह	प्रसिद्ध शायर	हमली	बहुत अच्छा
अक़्ला	अक्लमन्द	तमहीद	दीबाचा / इन्ट्रोडक्शन
तवाफ	प्रशंसा / बड़ाई	मसल	जैसा (मुहावरा)
इबादत	पूजा / ध्यान	मुसतग़रक	लीन
इलाही	प्रभु का	शामिलीन	शीलीन
बासफ़	वरनाएं (गुनह)	फ़ारसी हरफ	फ़ारसी के अक्षर
तरतीन	सिलसिलेवार / क्रमसे	मुरक्कासराना	संक्षेप में
फारसीख्वाह	फारसी जानने वाले	मोहताज	गुलाम / अधीन
रहबरी	मार्ग दर्शक	मौज़ा (गाँव)	स्थान
दुरुस्त	ठीक	क़यासी	अन्दाजन
हैचदान	तुच्छ	उर्दू इबारत	उर्दू मूल लेख
तवालत	देरी	फ़क़त	सिर्फ़ इतना ही
गोशा	एकान्त जगह	सैटूंट	दिशा
बेरगद	बेड़ / बोहड़	तफ़सील	विवरण
तरतीब	सिस्टेमैटिकली		
पलौथी	चौकड़ी / आलती-पालती	रान	पिन्डली
जिस्म	देह / शरीर	तासीर	प्रकृति
सरज़मील	उसी धरती पर	मुल्क मेरदम	जब और मुल्क हो उसके उर उम्र की मीत पाते ही [illegible]
मोहब्बत का लबरेज़		तजवीज	
		फ़रीकी भाई	भाई-चारा
रहूल	दमा	गत / गति	मुक्ति
काश्तकार	खेतीहर / किसान	अहाता	चार दिवारी
जक्खा	मदा	निगहबानीजा	मज़की सुरक्षा
मुकर्रर	निहितन	तजवीज	उपाय

- **ब्यान इस बात का कि फ़ीज़माना तहक़ीक़ात मौक़ा तीर्थहाये किस-किस पंडित वगैरह ने कोशिश की।**

मशहूर है कि पहले वो सबब अमलदारी बादशाहान अहले इस्लाम के और गैरअमलीमतअमाल साबक़ा को अक्सर तीर्थ का मौक़ा गुम हो गया था। और निशान भी जाता रहा था। कई सौ बरस के करीब हुआ। के रामचन्द्र दंडी स्वामी फ़क़ीर साकिन काशी, ने पर शौक़ तमाम कुरुक्षेत्र की, करके दो हजार श्लोक का ग्रंथ बनाया और बाद उसके और ब्रह्मचारी पंडित साकिन थानेसर ने इरादा जातरा का किया। और ग्रन्थ बराह महातम कुरुक्षेत्र से निशान तीर्थहाये का लेना चाहा मैं दंडी स्वामी फ़क़ीर कामिल था। उसने अपने दिल में यह अहद किया कि हम उस तीर्थ को क़ाबिल परस्तिश व अस्नान क़बूल करेंगे, कि जिसकी निसबत हमको ख्वाब में बशारत उसके नाम व पता निशान की मिली और वही तीर्थ फ़ेहरिस्त में लिखेंगे, चुनांचे वैसा ही हुआ। और उन्होंने यूं महातम कुरुक्षेत्र बनाया और पता सब तीर्थहाये लिख दिया, कि अब पंडितान व ब्राह्मणान उनको मन्दरजा शास्त्र कह कर के, जातरा कराते हैं। और उनसे अलहदा जो तीर्थ हैं गो के ज़बानज़द खासोआम उसका मशहूर है। मगर पंडितान उसको लौकिक कह कर शुमार में नहीं लेते।

और बाद उसके हरीगिर गोसाईं हुआ, कि उसने मार्फ़त इस सरज़मीन के मौज़ा सरहदा वीरान को आबाद कराके अपना कयाम किया। और एक शिवाला बनाया और उसके नीचे तालाब पुख़्ता तैयार किया और वि॰ सम्मत 1905 (1848 ई॰) तक वह ज़िन्दा रहा कि ग्यारह दफ़ा उसने परकरमा इन तीर्थहाय की करी। और एक दफ़ा फ़ेहरिस्त बकैद फ़ासला हर एक गाँव से दूसरे गाँव को और मौज़ा हर तीर्थ आबादी से बनाया। और खुलासा इसका इश्लोक शास्त्रदान में मुकम्मल कर दिया। और एक नक्शा भी बना दिया कि हाल के पंडित उसी को देखते हैं और मुक़ाबला है और माई जियान कौर सरदार महताब सिंह थानेसर वाला ने जातरा और परकमा जुमला तीर्थहाय सम्मत 1893 में बहुत पंडितों को साथ लेकर, हस्ब हिदायत शास्त्र के, किया। जिस जिस तीर्थ का नाम गुम हो गया था, तहक़ीकात को रोशन कराया कि उसकी इस उपकार से सदहा (सैकड़ों) आदमी उन तीर्थहाय से वाक़िफ़ हो गए कि इसका नाम भी बहुत दिन तक रहेगा।

उर्दू शब्दों के हिन्दी में अर्थ —

मार्फ़त	= एक दूसरे के साथ	सदहा	= सैकड़ों (सौयों)
वीरान	= उजड़	सरहदा वीरान	= उजड़ सेरदा गांव (जिला कैथल में)
जातरा	= यात्रा	विक्रमी सम्मत 1905	= 1848 ई॰
हस्ब हिदायत शास्त्र	= शास्त्रों की आज्ञा अनुसार	उर्फ़	= अन्य/दूसरा/उपनाम
सम्मत	= विक्रमी संवत	सवाब	= पुण्य
सन्	= ईस्वी/अंग्रेजी साल		

हाल सरज़मीन कुरुक्षेत्र के क़ायम अर्ज़ व तूल व हदूद की।

यह सरज़मीन कुरुक्षेत्र की 48 कोस और अर्ज 40 कोस मशहूर है। और जुगराफ़िया व इल्मे हैय्यत से यह ज़मीन तीस डिग्री मग़ाद मशरिक़ गरबन में और 77 डिग्री महाज़ी जनूबन शुमालन में वाक़े और देवधरती इस सरज़मीन को बोलते हैं। और उसके नेता की सरज़मीन को अड़न धरती कहते हैं। और इसकी ऐसी हद मज़बूत व मुस्तक़िल है कि हर कोई बाशिन्दा इस नवाह की वाक़िफ़ है। अगर दस क़दम भी देवधरती से बाहर जावे तो वह लोग तमीज़ अड़न धरती की कर सकते हैं। चुनांचे मौज़ा रसूलपुर की इलाका जींद में एक घर बोदी का देवधरती में सब आबादी हुई है जब नज़ा (मरने की) हालत में मौत ही हो घर वाला उसको इस आबादी के दरम्यान में ला रखते हैं ताकि उसकी मौत दिवार हरते में हो। और अजाब अबकी उसको न हो। यहाँ तक मरबलूब को ऐतबार व तमीज़ हदूद इस देव धरती की है। और मौज़ा माजोड़ इलाका जींद की आबादी भी अड़न धरती में है। वो भी वक़्त नज़ा के अपने गांवों के आदमी तरफ़ आलवा मौज़ा के लाके देव धरती में रखते हैं। और दो हद इस देव धरती की हसब ज़ैल ही हद शुमाली नदी सरस्वती हद जनूबी नहर जमना से थोड़े फ़ासले पर इलाका जींद में जो गरबी राज पटियाला इलाका सरदाना हद मशरकी थानेसर व नदी चौतंग से 3-3 — 4-4 कोस परगाना करनाल व लाडवा और इस सरज़मीन में

बहुत-बहुत कोरेशुमामां पहले ज़माना में हुई। कि
वो यादगार मखलूक है।

उर्दू शब्दों के हिन्दी में अर्थ

नक्शा = मानचित्र/MAP	अरज़ = चौड़ाई
हदूद रकबा = चौतरफा हद	तूल = लम्बाई
जुग़राफिया = भूगोल	इल्मे हैयत =
महादु =	मुहाज़ी =
वाके = स्थित	मशरक - मगरब = पूर्व-पश्चिम/ E - W
जनूब - शुमाल = दक्षिण उत्तर / S-N	मुकम्मल = पूरा
नवाह =	तमीज = समझ
वाकिफ = जानकार	चुनांचे =
मौज़ा = इलाका	साकिन = निवासी
मौक़ा = अवसर	नजा =
दहलीज = ड्योढ़ी	मखलूक = जनता
एतकाद = विश्वास	अहल धरती = आर्य धरती / पुण्य राशि धरती
हस्ब ज़ैल = नीचे लिखे	
मरदाना = आदमी/मर्द जात	ज़नाना = औरत जात / महिला
परगना = इलाका (तहसील)	तशरीह =
बुनियाद = नींव	जबान जुद अवाम =
मिसल = उदाहरण	माइनी =
बिशन = विष्णु	सबब = वजह
शुमार = गिनती/गणना	रवायत = रिवाज/प्रथा
गरकआब = पानी में डूबना	चर्बी = गोश्त/मांस/मेद
कैफियत = विवरण/ब्यौरा	औरत हामला =
नफ़ीस = उमदा	कलमा =
रकबा = क्षेत्रफल	कस्बा = Town
अगरचे = यदि	पुख्ता = पक्का

⊙ तशरीह इस बात की कि यह ज़मीन देव धरती बनाम कुरुक्षेत्र किस सबब से मशहूर हुई और बुनियाद इसकी क्या है?

शास्त्र हिन्दुस्तान में इस सरज़मीन के कई नाम लिखे हैं। जैसा यह ब्यान पंडितान से मालूम हुआ या ज़बान ज़द अवाम बतौर मिसल मशहूर मारूफ है। उसका तशरीह यह है। अव्वल बामन पुराण में इस ज़मीन का नाम समंत पंचक लिखा है। और इसके माइनी यह है — कि हर चार तरफ जिसके 5-5 योजन की दूरी हो। यानि 10 जोजन तूल और 10 जोजन अर्ज हो। वो समंत पंचक कहलाता है और यह ही पण्डित कहते हैं कि समंत जो शब्द है— उसके माइनी यह हैं कि छत्रियों (क्षत्रीयों) का अच्छी तरह अन्त इसी जगह हुआ। और दूसरा लफ्ज़ पंचक है। इसके माइनी वही 5-5 जोजन के फासला से मुराद है।

दूसरा नाम इसका ब्रह्मवेदि है कि ब्रह्मा ने पांच जग तमाम पृथ्वी पर करे हैं। उसने एक जग उत्तरवेदि इसी सरज़मीन पर करी थी। सतजुग में इस सरज़मीन का नाम ब्रह्मवेदि मशहूर रहा।

तीसरा नाम परयाग है।

अर्थ इसका यह है कि लफ्ज़ पर के माइनी बहुत के हैं। और लफ्ज़ याग जग को कहते हैं। तो परयाग उसको कहते हैं कि जहां सदियों तक बहुत जग हुए। और याग उसको भी कहते हैं

कि जहां बहुत नदियां आपस में शामिल होती हों। इस सरज़मीन में पहले नौ नदियां थीं। इन में से 6 नदियों का संगम इस सरज़मीन में हुसूल पज़ीर हुआ।

संगम अव्वल — कौशली नदी व दृषद्वती

संगम दोयम — अरुणाय व सरस्वती नदी

संगम सोयम — ओघवती व आपगा नदी

संगम चौथा — हरीक्षेत्र यानि हरि नाम विष्णु का है। विष्णु के नाम से क्षेत्र (क्षेत्र) कहलाया और कुरुक्षेत्र नाम से पहले इसका नाम हरिक्षेत्र मशहूर था।

संगम पांचवां — रामहृद परसराम अवतार ने क्षत्रियों (क्षत्रियों) को मार कर पांच तालाब खून से क्षत्रियों के भरे थे। परसराम का आखरी लफ्ज़ राम का लिया और तालाब को शास्त्र में ह्रद कहते हैं। इस सबब से इस सरज़मीन का नाम राम हृद तीर्थों में कहलाता था।

छठा — विनसन इस वास्ते नाम कि सरस्वती नदी जो इस सरज़मीन में जारी है वो ____ मौज़ा हंसडहर इलाका पटियाला की तर्फ़ में आलोप ____ गुम हो गई। पंडित कहते हैं कि पहले ज़माना में भील कौम ____ हंसडहर की तरफ़ बहुत रहती थी। सरस्वती नदी ने उनके खौफ़ से कि वो मुझ में ____ न अस्नान न करें, अपने आप को आलोप कर दिया। यही सरस्वती का विनाश हुआ। इस वास्ते विनसन नाम इस सरज़मीन का हुआ।

और दूसरा अर्थ उसका पंडित यह ही करते हैं कि क्षत्रियों का विनाश दो दफा यहां हुआ।
• एक दफा परसराम के वक्त में,
• दूसरी दफा महाभारत की लड़ाई कौरवों-पांडवों में। इस वास्ते इस ज़मीन का नाम ____

सातवां — कुरुक्षेत्र — द्वापर युग में कुरु राजपूत सूरजवंसी राजा कांसी का था। उसने इस सरज़मीन को पवित्र समझ कर यहां आ कर तपस्या करी। और उसका जिस्म यानि शरीर बहुत पुण्यवान था। और उसने अपने शरीर का गोश्त काट-काट कर बराह परमेश्वर इस सरज़मीन में बोया। ____ कहते हैं कि ____ इस की ____ हुई। हस्ब ख्वाहिश इस के यह ____ हुआ कि इस ज़मीन पर जो कोई कुछ खैरात ____ करेगा तो तेरह-तेरह गुना तेरह दिन तक फलता रहेगा। यानि तेरह हिस्सा रोज़ बढ़ता रहेगा तो यह इस क़दर हो जाता है कि शुमार में नहीं आ सकता। ____ के ____ एक ____ ज़माना ____ के ज़बान ज़द अवाम है कि राजा प्रद्युम्न ने अपनी रानी का कर्णफूल यानि ज़ेवर कान का दान किया और वो दान लेने वाले से ज़मीन में गिर गया। ____ बाद ज़मीन से निकला तो मसल चाक कुम्हार के हो गया था।

मखलूक इसकी —

मगर कुरुक्षेत्र का नाम अब तक बहुत जबान ज़द आम है। क्योंकि — यह ज़माना है। आइन्दा दरम्यान या आखिर कलजुग के इस सरज़मीन का नाम सन्याहित मशहूर होगा।

इन्होंने देव धरती इस तरह नामज़द हुए कि जो कोई इस सरज़मीन में मरे वो देवलोक में देवता हो, तो यह ज़मीन देवताओं — उसकी बुनियाद है। इस वास्ते देवधरती मशहूर हुई।

दूसरे यह रवायत है कि हिरनाकुश — जब — को चुरा कर जल में घुस गया था। और तमाम ज़मीनें गरक आब हो गई थीं। सिर्फ यह ज़मीन जल में नहीं डूबी थी, बाहर निकली रही। मौज़ा बारह (वराह) इलाका जीन्द में वराह अवतार पैदा हुए। और इसी तालाब में वराह अवतार ने गोता लगाकर पाताल में जाकर हिरनाकश को मारा। और मौज़ा खोखर परगना कहाना के जिस मौका में तालाब है, इसमें वराह अवतार निकला। कि लोक और उद्धार इस जगह का नाम हुआ। इस वास्ते भी यह ज़मीन देव धरती कहलाती है।

तीसरी यह रवायत ज़माने ज़द खास व आम है। लेकिन बहुत मशहूर है कि — जब महाराज विष्णु

की नाभ से कमल — से ब्रह्मा पैदा हुआ तो विष्णु महाराज इसी जगह पर लेटे और उस वक्त ज़मीन का वजूद न था। सिर्फ पानी पानी था। ब्रह्मा जी ने पैदा होकर पैदाइश मखलूक शुरू की। एक मधु और कैटभ। और वही दोनों महाबली थे। इन दोनों ने ब्रह्मा को और उनकी पैदाइश को खाना चाहा। विष्णु महाराज ने ब्रह्मा के बचाने के वास्ते उन दोनों — से युद्ध यानि लड़ाई करी।

कैटभ ने विष्णु महाराज से कहा कि तू अकेला था। और हम दो थे। तूने हमसे बहुत युद्ध किया। हम तेरे से खुश हुए। तू हमसे कुछ मांग। महाराज विष्णु ने बाद तौल कौल के उनका सर मांगा। और उन्होंने देना कबूल किया। इस शर्त पर जहां पानी न हो यानि तल हो। जल न हो, वहां हमारा सर काट ले। इस वक्त महाराज विष्णु जी जल पर पलौथी मार कर बैठ गए और कहा कि यहां जल नहीं है। चुनांचे अपनी रानों पर — को बैठा कर सर काटा और उनका तमाम जिस्म काट-काट कर फैंक दिया। उन की चर्बी से ज़मीन हो गई। उस ज़मीन का नाम मेदनी हुआ। और मेदनी शास्त्र में उस सरज़मीन को कहते हैं कि जो चर्बी की तासीर से वजूद — तो जिस कदर जगह पलौथी विष्णु के नीचे दी हुई थी, वो देव धरती रही। बाकी में गर्दी गर्द की मेद ने यानि अड़क धरती

मशहूर हो गई । और जकड़ा से भी इस सरज़मीन
का इन्कार पलीदी का है । यानि जैसा निज़ाम
आदमी की पलीदी से ज़मीन पर हो जाता है ।
उसी हैसियत से यह सरज़मीन वाके है ।

और एक रवायत जबान जद अवाम यह
भी है कि कौन ख़ास्त्र की —— से नहीं है ।
कि पांच हजार बरस हुए कि जब माबैन
कौरवान व पांडवान लड़ाई की तजवीज
हुई । इस तरफ का मुल्क नरदक मशहूर था ।
यह तजवीज हवाला ऐसी सरज़मीन वास्ते
लड़ाई के तज़वीज़ हो कि जो एक दूसरे के ऊपर 15
मोहब्बत गालब न हो, और रहम दिल में
न आवे । क्योंकि यह हर दो फ़रीकी
चचा - तायजाद भाई थे, एक कुनबा था ।
तलाश करने को जो आदमी तैनात हुए ।
जब इनका गुजर इस नरदक में हुआ ।
एक काश्तकार अपने खेत में आबपाशी यानि
सिंचाई करता था । नाका पानी का टूट गया ।
उस काश्तकार ने अपनी बेटी का सर काट
कर पानी का नाका बन्द कर दिया ।
इससे जाना गया कि इस जमीन से ज्यादा
कौन सी ज़मीन बेरहम नहीं होगी । तो यहां
लड़ाई तज़वीज़ हुई । और यह भी समझा
गया कि यह ज़मीन पुनीत है । इससे गति
हर एक की होती है । इस वास्ते महाभारत इसी
मौका में हुआ । तमाम अरबराज फरीकान
के 18 अक्षौहणी दल कहा जाता है । इस

48 कोस के माबैन में थी । और मशहूर है कि
हर चार गोशा पर इस ज़मीन के चार जकड़ा
(यक्ष) यानि फरिश्ते खड़े हो गए थे । एक
ने दूसरे का हाथ पकड़ लिया था, कि
उसमें एक अहाता गिर्द इस ज़मीन के हो
गया । उसके माबैन में लड़ाई होती रही
थी ।

और दूसरी रवायत
मुकर्रर होने चार जकड़ा (यक्ष) हर चहार गोशा
हदूद इस सरज़मीन के बतौर तो कि सरहद
यह ही मशहूर है कि जब ब्रह्मा ने जग उत्तरवेदि
करी थी, उस वक्त यह चारों जकड़ा
वास्ते तैनात व निगहबानी जग की चारों
खूंट पर कायम कर दिए थे । —— नहीं कि 16
यह बात सही हो, और मशहूर है कि मौज़ा
सरहदा माबैन इस सरज़मीन के ही पांडवान
का रणखम्भ इसी मौज़ा में था कि एक
तालाब इसी मौज़ा में सर्व देव तीर्थ है और
इसके किनारे एक दरख्त बरगद का है ।
सब कहते हैं यह बरगद आदि बरगद की
नसल व शाख है, कि जो महाभारत की
जंग में मौजूद था । और इस बरगद (बड़)
पर झण्डा लड़ाई का खड़ा था । और मौज़ा
सिसमौर में सिसला तीर्थ इसी सरहद से करीब
है । यह भी मशहूर है कि बबरुवाहन का सिर
श्री कृष्ण ने इसी मौज़ा में काट कर रणखम्भ
यानि झण्डा-जंग पर रखवाया था । और इस
की रूह दिमाग में रही और —— जंग

देखता रहा । और हर चहार जक्का (मद्दा) का नाम यह है ।

चहार जक्का (मद्दा)

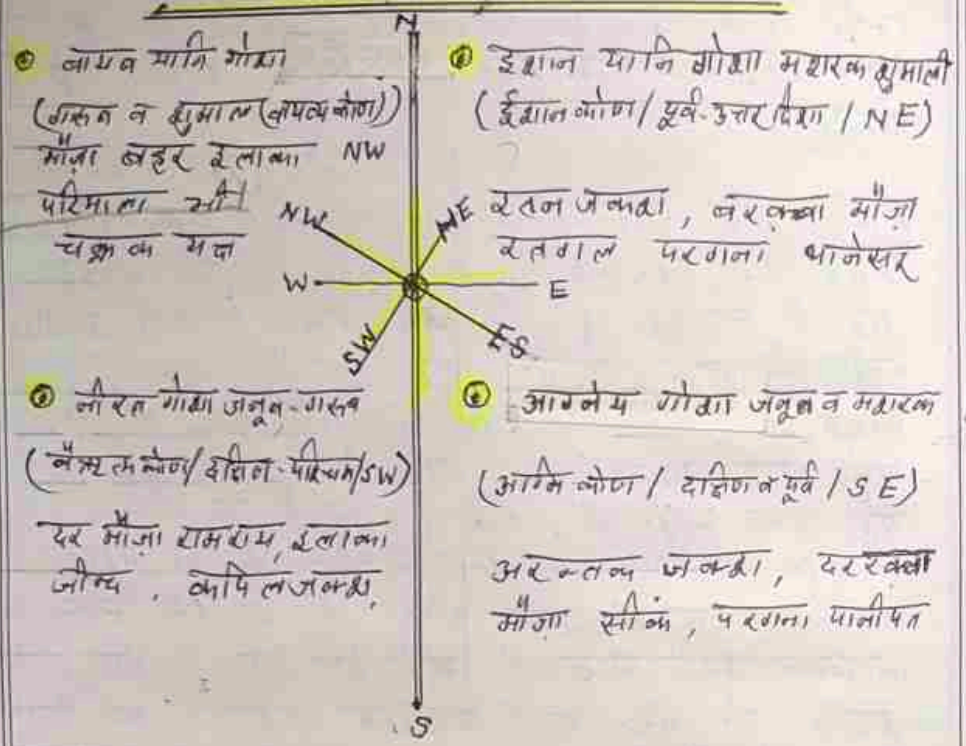

① वायव यानि गोशा (मग़रब व शुमाल (वायव्य कोण)) मौज़ा बहर इलाका परिमाला भी चक्र का मद्दा NW

② ईशान यानि गोशा मशरक शुमाली (ईशान कोण / पूर्व-उत्तर दिशा / NE) रतन जक्का, दरख्वा मौज़ा रतगाल परगना थानेसर

③ नीरत गोशा जनूब-मग़रब (नैऋत्य कोण / दक्षिण-पश्चिम/SW) दर मौज़ा रामराय, इलाका जीन्द, कपिल जक्का,

④ आग्नेय गोशा जनूब व मशरक (अग्नि कोण / दक्षिण व पूर्व / SE) अरन्तक जक्का, दरख्वा मौज़ा सींक, परगना पानीपत

इस महाभारत कैफ़ियत से इस सरज़मीन में बहुत अलामात और तीर्थ कायम हैं कि इनका मुफ़स्सल लिखना तूल है ।

अब लिखता हूँ नाम नदियों का व बनों का, जो शास्त्र में लिखे हैं । ज़माना से सब बदल गया ।

⑥ ब्यान बन हाला इस सरज़मीन में थे

नाम बन	मौज़ा	कैफ़ियत
① काम बन	कमौदा परगना नगर साढ़क थानेसर	अब कुछ बन का निशान नहीं । जैसा सब देहात में जंगल व ज़मीन है
② अदिती बन	अमीन	इस गाँव में चक्रव्यूह किला की बुनियाद है कि अर्जुन पांडव का बेटा अभिमन्यु मारा गया था । आज तक उस किला की ईंटें निकलती हैं । पंजा का निशान उन पर है । और यह एतकाद मखलूक को है कि जिस औरत को बच्चा पैदा न होता हो —— पढ़ जावे । इसकी ईंटें उसके सिरहाने रखें या धोकर पिलावें, बच्चा पैदा हो जावे । और भी ऐसी हालत औरत हामला के वास्ते ज्योतिष कहते हैं कि वो इस कलमा की शक्ल का होता है, और इसको चक्रव्यूह बोलते हैं । मगर हकीकत में जानकर वह नाम था । शास्त्र में व्यूह को कहते हैं । और चक्र मुराद पेचदार से है ।
③ व्यास बन	मौज़ा बास परगना करनाल	

18

④ मधूवन	मौज़ा मोहना परगना कैथल	
⑤ फलकी बन	फरल परगाना कैथल	इस गाँव में सोमवती अमावस को पिंड भरे जाते हैं कि माह असौज में सोमवारी अमावस हो। इसका फल 'गया' के माफ़िक समझते हैं।
⑥ सितबन	सीवन परगाना कैथल	
⑦ सूर्जबन	मौज़ा सजूमा इलाका पटियाला	

⑧ और जो नदियां शास्त्र में वास्ते इस सरज़मीन की हस्बजैल कहते हैं। निशान उनका कोई नहीं। मे कहते हैं कि महाभारत के वक़्त में जो जगह मकसो की गई उस वक़्त में तो अन्ट गईं। कहीं कहीं इनका निशान बाकी है। बरसात में पानी सैलाब इस तरफ को रवां हो जाता है।

⑨ तफ़सील नौ नदी

1 नाम नदी बरवक़्त	2 नाम नदी बरवक़्त नागरी	3 कैफ़ियत
① सरसौती नदी	सरस्वती	शुमाली हद पर जारी है। 19
② बैतरनी	वय तरणी	ठोठा (ट्योंठा) व पुण्डरी के रकबा में होकर गई है।
③ आपगमा	आपगमा	कैथल से पच्छम तरफ को है। गदली तीर्थ इसी नदी में कहा गया है।
④ मन्दाकनी गंगा	मंदाकिनी गंगा	जिगदू में को गई है।
⑤ मधूसरवा	मधूसरवा	कैथल से पहाड़ (उत्तर दिशा) की तरफ गई है।
⑥ अंशमती	असमती	कस्बा कैथल के बीच में को दरगाह शाह वलायत के नीचे को और अंजनी के टिल्ले के नीचे को गई है।
⑦ कौसकी	कौशकी	मैवली व मौज़ा वालू गांव में होकर गई है।
⑧ द्रसवती	द्रुसवती	फरल परगना कैथल में होकर गई है।
⑨ हरनावती उर्फ़ दुरबवती	हिरणवती विख्यात दुरबवती	थानेसर व मिरज़ापुर कस्बा के पास होकर गई है।

20

हाल परक्रमा ब्रह्मसर का नवाए रकबा थानेसर में।

फ़ी ज़माना ब्रह्मसर नवाई कस्बा थानेसर का नाम मशहूर है। जो कोई जातरा कुल 48-48 कोस परक्रमा कुरुक्षेत्र की नहीं कर सकता। और इस ब्रह्मसर की परक्रमा करता है। और ब्राह्मणान इस परक्रमा का सवाब भी बहुत समझते हैं। और इस ब्रह्मसर में देहात मुफस्सल ज़ैल का रकबा अन्दर आ जाता है। कस्बा थानेसर खास- गढ़ी मारकन्डा - रतगल - सुन्दरपुर - गढ़ी रामनगर - गढ़ी ब्राह्मणान - आलमपुर - दयालपुर - कसीतल खुर्द व कलां - मिर्ज़ापुर - नरकातारी - बाहरी। (बारहा के दान से बना बारही शब्द सही है)

और इसी ब्रह्मसर में जिस कदर तीर्थ हैं वो फेहरिस्त में बदेहात मज़कूरा वाला लिखी गई हैं। —— फ़कत (बस इतना ही)।

और इस ब्रह्मसर के माबैन में तालाब कुरुक्षेत्र वाके है। कि ब्रह्मा ने बाइत्तफ़ाक अरवसीरान व —— की उत्तरवेदि जग इसी जगह करी थी। और इस जगह ब्रह्मसर की परक्रमा अठकोसी कहलाती है। यानि चार-चार कोस हर चार तरफ से यह सरज़मीन की है।

═

नम्बर 1 मुख्तसर बयान कुरुक्षेत्र तालाब वाके थानेसर।

अगरचे इस सरज़मीन में बहुत तालाब व तीर्थ वाके हैं। मगर फ़ी ज़माना कुरुक्षेत्र तालाब सभी में अज़मत रखता है। और बवक्त गर्मी आफताब (सूर्य) की हज़ाराहा (हज़ारों) मखलूक जमा होकर अस्नान करते हैं। और खैरात का सवाब अज़ीम समझते हैं। यह तालाब निहायत कलाँ है। और

—— उसका तूल 1243 ——

अंग्रेज़ी और अर्ज़ 681 —— ।

पहले ज़माना में यह तालाब पुख्ता था। अब तक जानिब शुमाल और कुछ जानिब गरब घाट वगैरह बने हुए हैं। जनूब व मशरक की तरफ —— हो गई। कहीं-कहीं बुनियाद इसकी है। और सिमत शुमाली पर 19 घाट और तरफ मशरक पर एक घाट और सिमत गरबी पर पांच घाट बनाए हुए मशरक लोगों के हैं कि उसकी फेहरिस्त के नम्बरवार नकशा इस तालाब के हैं। और माबैन में इस तालाब के दरम्यान शारत्र हिन्दुवान चन्द्रकूप था। और रिसी जी का मन्दिर भी वहाँ मशहूर है कि अमृत का चाह (कुंआ) भी इस मौका में था। जहांगीर बादशाह या अकबर शाह ने बराह —— मज़हब के वहाँ मसजिद बनाई। और मुगलपुरा आबाद किया कि उस मसजिद की बुनियाद अब तक है। और एक पुल पुख्ता —— बादशाही वक़्त

का जनूब शुमाल बना हुआ है। अब तक हिन्दुस्तान बुनियाद उस मस्जिद की

उखाड़ना सवाब समझते हैं। जो कोई वहाँ जाता है, वो एक ईंट उखाड़ कर बाहर

डालता है। और इसी तालाब की मशरिक में बाबा हरदीप फकीर ने एक शिवाला बनवाया।

और शुमाली किनारे से ता शिवाला एक पुल पुख्ता बनाया। कि अब उस से रौनक

हो गई। मगर यह तालाब बहुत

22 पुरा हो गया। उस नजदीक जमाना में किसी

23 ने उसकी मुरम्मत ना कराई। और न किसी

ने मिट्टी निकलवाई। बावजूद बड़े-बड़े

सरदार महाराजा मसल राजा पटियाला व महाराजा रणजीत सिंह हुए। मगर किसी

को दुरुस्ती इस तालाब की ना हुई।

अब के कप्तान लार कीन साहब बहादुर डिप्टी कमिश्नर थानेसर हैं। साहब

ने की की। इस तालाब

को खुदवाना चाहा। और शुरू माह जुलाई

54 से खुदाने की और

नक्शा तजवीज कर दी। और उसकी परवान

गवर्नर जनरल ने भी दो हजार रुपया देना कबूल किया। और राजगान और सरदारान

हिन्दुस्तान को लिए गए। अब तक

चौदह हजार रुपया जमा हुआ। उस में से वसरम

दो-अढ़ाई हजार रुपये की दो घाट

में और एक घाट ऊपर गोशा गरबल वे जनूब

के बनाया गया और इनके इन्तजाम को

एक धर्म सभा पण्डित केदारनाथ

साहब मुकर्र हुई है। और

बहुत आदमी उसके मैम्बर मुकर्र हुए। अगरचे पंडित केदार नाथ साहब के

मर जाने से माह अप्रैल व मई

को सुस्ती इस काम में आ गई।

23 मगर फिर भी

24 को

यहाँ लाज़िम रखी। तो है कि यह मुराद

लोगों की हो जावे। और वाजे हो

कि एक कोल नदी चौतंगा व सरस्वती भी

इस तालाब में आकर पड़ती है। जब पानी तालाब का कम हो जाता है इस कोल

से पानी लाया जाता है। चुनांचे नक्शा इस तालाब का यह है।

नक्शा तालाब

24

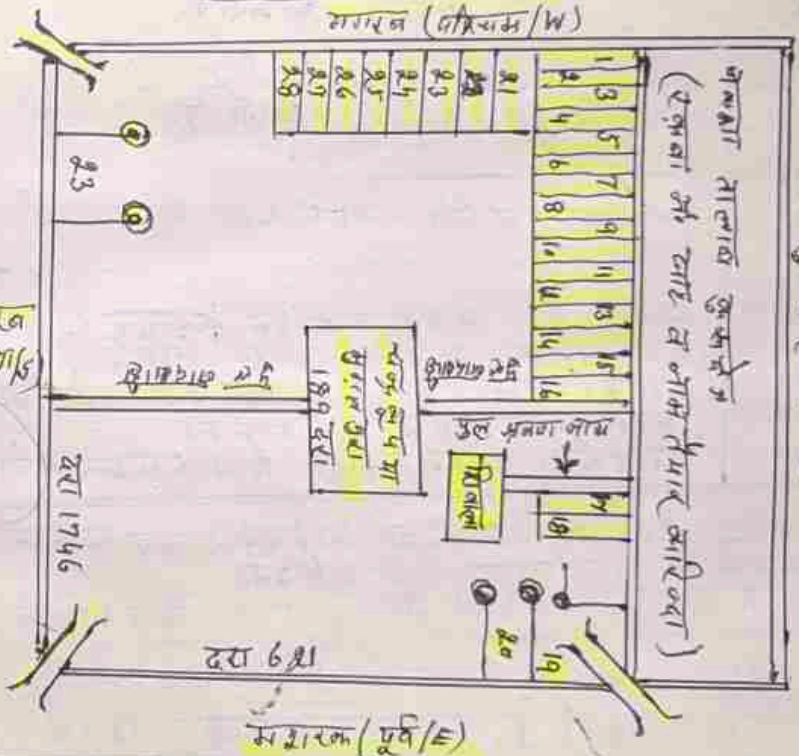

घाट बनाने वालों की फैहरिश्त

घाट नं.	घाट बनाने वाले का नाम
1	घाट मरदाना कर्म सिंह राजा पटियाला
2	घाट जनाना कर्म सिंह राजा पटियाला
3	खिन्द्रा मल ब्राह्मण लूना [illegible]
4	[illegible]
5	औरी बाई अलवर वाले [illegible]
6	[illegible]
7	[illegible] ब्राह्मण थानेसर
8	रानी प्रेम कंवर मनी माजरा वाली
9	मोती ब्राह्मण थानेसर
10	बसी वल्द सल्लो लुहार थानेसरी
11	[illegible] महाराजा रणजीत सिंह [illegible]
12	[illegible] लौदा
13	गुरदयाल महाजन पटियाला
14	बिहारी लाल लखनवी
15	बाबू [illegible] ब्राह्मण थानेसरी [illegible]
16	[illegible]
17	बाबा सरवन नाथ फकीर
18	[illegible] महाजन मिर्जापुर
19	[illegible] थानेसरी [illegible]
20	[illegible]
21	महाराजा कर्म सिंह राजा पटियाला घाट
22	[illegible]
23	[illegible]
24	घाट मरदाना लारकीन साहब बहादुर
25	घाट जनाना लारकीन साहब बहादुर
26	मनोहर दास साधू (गुरु राजा पटियाला)
27	परमानन्द मिश्र थानेसर
28	लारकीन साहब बहादुर डिप्टी कमीश्नर थानेसर

और एक कसीदा तारीख तरमीम [illegible] लारकीन साहब बहादुर डिप्टी कमिश्नर [illegible] साहब [illegible] ने जो [illegible] किया। उसका [illegible] [illegible] 1256 ई० [illegible] हिज्री 1272

[illegible]

फैहरिश्त तीर्थहाए कुरुक्षेत्र

व तरतीब रवानगी प्रक्रमा

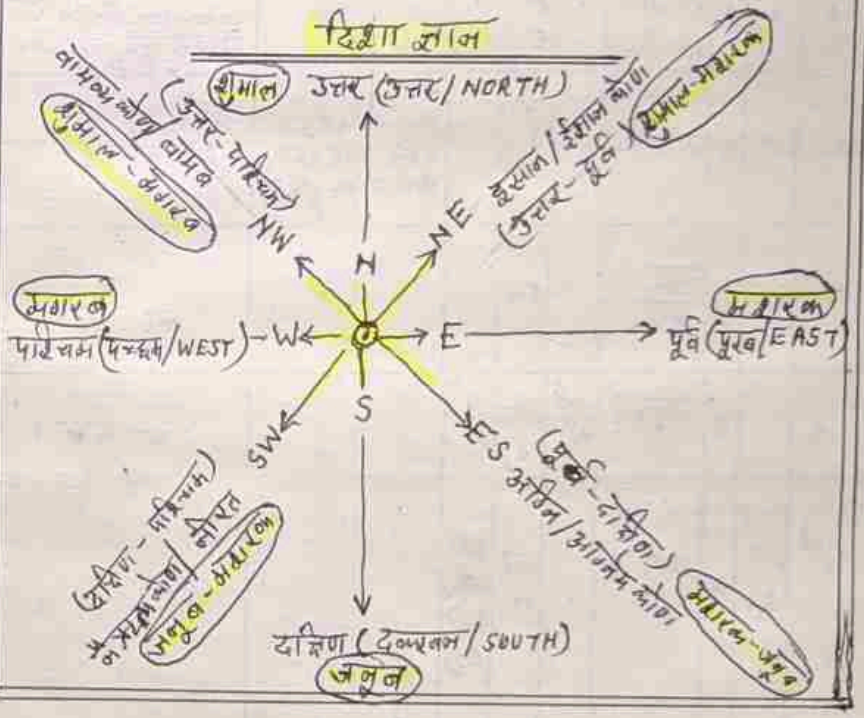

⊙ फ़हरिशत तीर्थहाय कुरुक्षेत्र व तरतीब रवानगी प्रक्रमा

	1	2	3	4	5	6	7		8	9
	नाम परगना	नाम मौज़ा मौकूअ फ़ारसी व नागरी	फ़ासला हर गांव का दूसरे गांव का	नम्बर तीर्थ	नाम तीर्थ नागरी व शास्त्र व पुराने पारसी के कागजी	नाम तीर्थ मशहूर आम	फ़ासला व सिम्त तालाब हौज़ कुंआ वगैरह के — सिम्त	फ़ासला	कैफ़ियत	पहली मस्तना नोट — हर गांव में जितने तीर्थ हैं उन सब का सिलसिला एक ही तालाबे में लिया है।
	थानेसर	कस्बा थानेसर	·	1	अस्थानू	·	उत्तर N	कुरुक्षेत्र	इस तीर्थ से रतन यक्ष दो कोह है।	मनोकामना सिद्ध होती है।
28	″ सजन पाति कही	″	·	2	सन्नीहत्या (सन्नीहित)	·	पूर्व E	″		अश्वमेध जग का फल अस्नान और श्राद्ध करने से राजसूय जग (यज्ञ) का फल है।
29	″	″	·	3	रुद्रकूप	·	वायव्य WN प०उ०	″	अव्वल इन चार तीर्थ की परक्रमा करके फिर रवाना तीर्थहा का शुरू करें	आविन की ___ का फल।
	″	″		4	रुद्र हरद	,	नैरत द०प० SW	″		___ का फल।
	″	″		5	वामुसर	कुरुक्षेत्र	दक्षिण S	″		___ का फल।
25-30	″	रतगल	तीन कोह	6	कोटि तीर्थ		उत्तर N	एक जान (ज़ेहो) ज़मा (30)	___	___
30	थानेसर परगना	″	″	7	गंगा हृद	,	ईशान गामक मुख			अश्वमेध राजसूय जग का फल व रतनल यक्ष (यज्ञ) की पूजा का फल।
31	″	अमीन	1 कोह (कोस)	8	अदाती कुंड (अदिति कुंड)	,	पू० E	″	अदिति वन यह अदिति कुंड इस वास्ते कहलाता कि अदिति जी माता देवता हा के थी।	पुत्र की प्राप्ति का फल
	″	″	″	9	भजकसक	,	ईशान NE	″	इस तीर्थ पर बजारा ___ की पूजा होती है और यह तीर्थ ___	हजार सवा गऊ के दान का फल
31-32	″	सगा	8 कोह	10	विमलसर	,	उ० N	″	इस तीर्थ के पूर्व में एक टीला है वहां भी कृष्ण जी और ___ की पूजा होती है।	विमल लोक व ___ का फल
32	करनाल	पुटुलोर कुँ	6 कोह (कोस)	11	पारिपलू	पंडुपापपरिसर	ईशान N W उ० पू०	″	इस तीर्थ की जानब शुमाल एक रस्ता आमद पानी का है उसके पश्चिम में दरख्त बरगद मौजूद है पूजा यक्षा जी की होती है।	ब्रह्म जग (यज्ञ) व ब्रह्म लोक की प्राप्ति का फल
	″	बालू	1 कोह	12	कौशिकि संगम	,	उ० N	″		दौलत के मिलने का फल
33	″	″	″	13	चरनी	चामसर	वायव्य N W	″		हजार ___ के दान का फल और पाप किया हुआ भी दूर होता है।

1	2	3	4	5	6	7		8	9
करनाल	बाहू	1 कोस	14	पालूक	,	औरत द० प० SW	मुतफ़र्रिक		की पूजा का फल।
"	"	"	15	पिपला दह	जोहड़ा	पू० E	"		की खुशी प्राप्त हो।
"	"	"	16	सूरज कुंड	जलाशी	अग्नि S E	"		सूरज पूजा का फल
"	अगोंद	3 कोह	17	कुस्थल	,	उ० N	"		इसके उश्नान से मुकम्मल निमाम मिलता है।
"	"	"	18	दशरथ	,	नं० 18 के सम्म पक्का	"		दश अश्व की दान का फल
"	"	"	19	अगाम तीर्थ	,	द० S	"	इस तीर्थ पर एक लिंग महादेव जी का है।	इसके अश्नान से फिर जन्म नहीं होता। मुक्ति हो जाती है।
34 "	उचार	2 कोह	20	दक्ष आश्रम तीर्थ	,	प० W	भीम कोह		अश्वमेध जग का फल
"	उपलाना	3 कोह	21	उप पत्नी	पावन तीर्थ	पू० E	मुतफ़र्रिक		धर्म की प्राप्ति होती है।
35 "	सालवन	2 कोह	22	हंसतीर्थ व सायूरवी	—	उ० N	"	इस तीर्थ पर विष्णु जी और शिवजी की पूजा होती है।	दश अश्वमेध जग का फल
"	मुसालवा	1 कोह	23	ब्रह्म तीर्थ	,	द० S	"		गऊ दान का फल

1	2	3	4	5	6	7		8	9
36 जींद ख़ास	सफीदों (सर्प दमन)	4 कोस	24	सर्प दर्प	नाग दमन	द० S	मुत०	यहां एक शिवाला महादेव का है जिसकी पूजा होती है।	इसके अश्नान से सांप की दहशत नहीं होती। अग्नि — जग का फल
पानीपत	सींख	3 कोस	25	यक्ष कुंड	तीरथ	द० पू० S E	"	— यक्ष इसकी पूजा बतौर यक्ष लाजक करना चाहिए	सिद्धि हासिल होती है।
"	"	"	26	यक्षी यक्ष	,	पू० E	"	इसकी भी पूजा बतौर यक्ष होती है।	खौफ़ मालिक यह बात नहीं होती।
37 जींद परगना	हात (हाट)	2 कोस	27	पंच लिंग	कोटि तीर्थ	नामल (N W) (उ० प०)	"	किनारा इस तीर्थ पर पूर्व की तरफ़ महादेव जी का स्थान करके पूजा करनी चाहिए। और नाम इन महादेव जी का कोटीश्वर है।	पांच जग (यज्ञ) का फल होता है।
"	कालवा	2 कोस	28	सूरज कुंड	जलाशी कुंड	पू० E	"		सूरज की पीड़ा नहीं होती।
"	आसन	3 कोस	29	रूपवती	,	प० W	"	यहां अश्विनी कुमारों की पूजा होती है।	रूप मालिक खूबसूरती हासिल होती है।

	1	2	3	4	5	6	7		8	9
38	औंध	करा कलां	श्क्रोह	30	बराह	'	प० S	मु०	यहां खल्ल नदी द्रिषदवती जानब दक्खन को, जहां से तीर्थ जारी है, उसके पास एक लिंग है उसकी पूजा चाहिए और —— इसके गोशा में टीला बना है इसमें दर्शन बराहजी के होते हैं इसकी भी पूजा चाहिए।	परम पद हासिल होता है।
	〃	〃	〃	31	चन्द्र कूप	'	औं० 30 से पच्छिम में	〃		चन्द्रमा की पीड़ा नहीं होती।
39	〃	〃	〃	32 33 34 35 36 37 38	सप्त सोम कूप	'	नं० 30 से उत्तर में	〃		सात सोम जग का फल।
	〃	〃	〃	39	सूरज कुंड	सूरज कुंडें	पू० E	〃		सूरज की प्रीति का फल
	〃	〃	〃	40	चन्द्र कुंड		पू० E	〃		चन्द्रमा की प्रीति का फल
40	〃	पिंडार	2 कोस	41	सोम तीर्थ	पिंडारा	प० W	〃	सोमवती मावस को यहां मेला होता है। और जो कोई पिंडदान करे मुताबिक गया के उसका फल होता है। और इस जगह सोमेश्वर महादेव की पूजा है।	राजसूय यज्ञ का फल।

	1	2	3	4	5	6	7		8	9
	औंध परगना	कस्बा औंध	5 कोस	42	भूतेश्वर	'	पू० E	[illegible]	यहां भूतेश्वर महादेव का कच्चा स्थान में है इस जगह के रहने वालों से बुधवार उसकी पूजा करनी चाहिए।	मुक्ति होती है।
41	〃	〃	5 कोस	43	सोम	'	उ० N	〃		सोम शुक्र देवता की प्राप्ति होती है।
	〃	〃	〃	44	शुक्र	'	उ० N	〃		बदरी केदार जातरा का फल।
	〃	〃	〃	45	ईशी दहरा	'	ई० NE	〃		पाप दूर हो जाता है।
	〃	〃	〃	46	ज्वाला माल दूसर	'	वायव NW	〃	इस तीर्थ की दक्षिण की तरफ ज्वाल माल इश्वर महादेव जी हैं उनकी पूजा जाकर करें।	इसके दर्शन से फिर जन्म नहीं होता।
42	〃	〃	2 कोस	47	सूर्ज कुंड	'	प० W	〃		सूरज की पीड़ा से छूट जावे।
	〃	ढूंढू	2 कोस	48	एक हंस तीर्थ	'	द० SW	〃		हजार गौओं की दान का फल।
	〃	पुन: पुन:	1 कोस	49	क्रेत शौच	'	वायव	〃	यहां पूजा नरसिंह जी और शकाली जी इन्हीं नरसिंह जी की चाहिए	पुण्डरीक जग का फल।

	1	2	3	4	5	6	7	8	9
43	औंद परसाला	पुन: पुन:	1 कोस	50	पुन:	.	आमने N W मुत [illegible]		इसके अस्नान से अक्ल दुरुस्त होती है।
	"	"	"	51	"	.	W S "		"
	"	"	2 कोस	52	देव तीर्थ	.	मध्य द० W S [illegible]		गया के श्राद्ध माफिक फल होता है।
	"	"	3 कोस	53	मुंजवट	.	पू० E मुताबिक	यह दोनों तीर्थ नं. 52 व 53 करीब हर दोनों गांवों यानि पुन: पुन: और दुद्दला में यहीं और पहले-पहल महादेव की पूजा होती है। एक दरख्त बरगद का था, वो गिर पड़ा। अब एक गड़ा मौजूद है। इसमें	शिवजी की गण का फल।
44	"	"	1 कोस	54	गिराही मठ	.	नैऋत W S [illegible]		यहां के अस्नान से सब पाप दूर हो जाते हैं।
	"	पुष्कर के हद्दे	2 कोस	55	पुष्कर तीर्थ		नैऋत W S [illegible]	इन तीर्थ में 3 देवता की पूजा होती है। ब्रह्मा-विष्णु-महेश	अश्वमेध जग का फल।
	"	रामह्रद उर्फ रामराय	1 कोस	56	रामहोला (सन्हीत)	.	पू० E "	आदित मठ यहां उलखल मेखला देवी है और इस मठ की ही पूजा बतौर मठ साबक करनी चाहिए।	सरगा की प्राप्ति होती है।
45	औन्द पसाला	रामराय	1 कोस	57	इच्छी हरदह	सूर्य कुंड	पू० E मुला०		अश्वमेध जग का फल
	"	"	"	58	हिर दह	.	उ० N "	पांच राम इसमें शामिल हैं। यहां 3 देवता की पूजा चाहिए। परस राम जी - रेणुका मादर परस राम - जमदग्न पिदर परस राम जी के।	___ के मुताबिक फल मिलता है।
46	हांसी	बर सोला	4 कोस	59	वंश मूल	.	द० S "	जो कोई इस तीर्थ में अस्नान करे उसके वंश	वंश की उद्धार का फल।
	[illegible]	कसूहन	2 कोस	60	कामा [illegible] (कामा [illegible])	.	पू० E "		देह पाक बदन शुद्ध होता है। और परम पद हासिल होता है।
	कठाना	कुच राना	2 कोस	61	कुश्रा तीर्थ	.	उ० N "		गौ दान का फल
	"	"	"	62	सूर्य कुंड	.	प० W "		सूरज की प्राप्ति होती है।
47	"	लोधर	5 कोस	63	लोक उद्धार	.	उ० N "	यहां विष्णु और महादेव की पूजा चाहिए	कुल का उद्धार होता है।

	1	2	3	4	5	6	7		8	9
43	कैथल परगना	पुनः पुनः	1 कोस	50	पुनः	.	जानब N W	मुतअल्लिक		इसके अस्नान से अकल दुरुस्त होती है।
	"	"	"	51	"	.	W S	"		"
	"	"	2 कोस	52	देव तीर्थ	.	मगरीबी व दः W S	मुतअल्लिक		गाय के आंदू मालिक फल होता है।
	"	"	3 कोस	53	मुंजवट	.	पू० E	मुतअल्लिक	यह दोनों तीर्थ नं 52 व 53 बरहद दोनों गांवों यानि पुनः पुनः और दुटेवा में यहीं और पहले-पहल महादेव की पूजा होती है।	शिवजी की शरण का फल। → एक दरख्त बरगद का था, वो गिर पड़ा। अब एक गढ़ा मौजूद है।
44	"	"	1 कोस	54	गिराही मद्द	.	मग़रिब W S	[illegible]		यहां के अस्नान से सब पाप दूर हो जाते हैं।
	"	पुष्कर के हदे	2 कोस	55	पुष्कर तीर्थ		मग़रिब W S	मुतअल्लिक	इन तीर्थ में 3 देवता की पूजा होती है। ब्रह्मा-विष्णु-महेश	अश्वमेध जग का फल।
	"	रामह्रद उर्फ रामराय	1 कोस	56	समहीना (सन्नीत)	.	पू० E	"	कापिल मद्द यहां उलखल मेखला देवी है और इस मद्द की ही पूजा बतौर मद्द साकल करनी चाहिए।	सरग की प्राप्ति होती है।

	1	2	3	4	5	6	7		8	9
45	जीन्द परगना	रामराय	1 कोस	57	उत्तरी ह्रद दह	कुंड	पू० E	मुतअल्लिक		अश्वमेध जग का फल
	"	"	"	58	हरि दह	.	उ० N	"	पांच राम ह्रद शामिल हैं। यहां 3 देवता की पूजा चाहिए। परस राम जी – रेणुका मादर परस राम - जमदग्न पिदर परस राम जी के।	— के मुताबिक फल मिलता है।
46	हांसी	बर सोला	4 कोस	59	बंस मूल	.	द० S	"	जो कोई इस तीर्थ में अस्नान करे उसके बंस	बंस की उद्धार का फल।
	[illegible]	कसूहन	2 कोस	60	काया शुद्ध (काया शुद्ध)	.	पू० E	"		देह यानि बदन शुद्ध होता है। और परम पद हासिल होता है।
	[illegible]	कुचराना	2 कोस	61	कुश तीर्थ	.	उ० N	"		गौ दान का फल
	"	"	"	62	सूर्ज कुंड	.	प० W	"		सूरज की प्राप्ति होती है।
47	"	लोधर	5 कोस	63	लोक उद्धार	.	उ० N.	"	यहां विष्णु और महादेव की पूजा चाहिए	कुल का उद्धार होता है।

1	2	3	4	5	6	7	8	9
पटियाला परगना	रसाहला	3 कोस	64	शिव कुंड	,	ईं० (N E) उ० पू० कुरुक्षेत्र से	अव्वल यहाँ ______ महादेव जी के दरशन करके बाद अज़ां तीर्थ में असनान करनी चाहिए	शिवजी का पूजा का फल।
"	मतोड़ (मटौर)	3 कोस	65	मुकर तीर्थ	,	पू० E "		मुक्ति की प्राप्ति होती है।
"	कसान	1 कोस	66	सिरी तीर्थ (श्री तीर्थ)	,	उ० N "	महां लक्ष्मी जी और विष्णु जी की पूजा चाहिए	लक्ष्मी जी की प्राप्ति होती है।
"	कैलाश (कलायत)	3 कोस	67	कपिला हृद	,	द० S "	यहाँ कपिलेश्वर महादेव और गौरी पारबती और सब देवताओं की पूजा चाहिए।	हजार कपिला गौ की दान का फल।
"	सुजमान (सजूमा)	3 कोस	68	सूर्ज	,	प० W "	सूरज वन ______ और इस तीर्थ की पूर्व की सुमाल की तरफ सूर्ज जी की पूजा होती है।	सूरज लोक की प्राप्ति और मुक्ती हासिल होती है।
कैथल परगना	गुहना	2 कोस	69	व्याम भवन	,	प० W "	तीर्थ के दक्खिन की तरफ गणेश जी की मूरत है इसकी और नीज़ ब्रह्मा जी की पूजा होती है।	हजार गौओं की दान का फल है।

	1	2	3	4	5	6	7	8	9
49	पटियाला	सोधन	3 कोस	70	सरस्वती देवी तीर्थ	,	ईशान N E कुरुक्षेत्र से	यहाँ पूजा महा सगली देवी व यदा व ब्रह्मा की चाहिए।	खूबसूरती हासल हो और लक्ष्मी जी की प्राप्ति होती है।
	"	"	"	71	ब्रह्मा वर्त		ई० NE "		ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति हो।
	कैथल	मौज़ा नहर	"	72	यदा लोंड	,	उ० N "	अरचना यदा व चक्रमदा	मनोकामना हासिल होगा
50	"	बहीर	"	73	चर्व कुंड	,	नं० 72 से पूरब में "		चर्व लोक की प्राप्ति होती है।
	पटियाला	बहीर		74	बिल्वुक	,	नं० 73 से तरफ ई० NE "	यहाँ ______ देवी की पूजा होती है।	______ देवी के दर्शनों का फल।
	कैथल	पोरां	1 कोस	75	गन्धर्व तीर्थ	,	प० W "	यह तीर्थ सरस्वती के किनारे पर है।	गन्धर्व लोक की प्राप्ति हो।
	"	ब्रह्मा वर्त (अरमोत या प्रभोत)	नीम कोह	76	ब्रह्मावर्त	,	प० W "	यहाँ ब्रह्मा व रिसी और देवताओं की पूजा होती है।	ब्रह्म लोक की प्राप्ति हो।
51	"	सोहृषा (सोयभा)	3 कोस	77	सुतीर्थ	,	प० व ई० W & NE	यह तीर्थ पुरानी सरस्वती में है और भगवान ______ ______ इनका पूजा चाहिए।	अश्वमेध जग का फल

1	2	3	4	5	6	7	8	9
कैथल	सीवन	1 कोस	78	सोमती	.	प० W मुतसला	और यह तीर्थ सरस्वती के पुल से जानब मशरक है। ——— जी की पूजा चाहिए।	अक्ल तेज होती है।
पेहवा	स्वनोर	4 कोस	79	कामेश्वर	.	प W "	यहां कामेश्वर महादेव जी की पूजा होती है।	सब रोग दूर हो जाते हैं।
52 कैथल	रसूलपुर	तीन कोस	80	मातरी	,	पू० E "		औलाद की ——— और लक्ष्मी जी की ज्यादती हो।
"	"	"	81	असंमती	,	नं० 80 से जानब शुमाल (N) "		पाप दूर हो जाते हैं और गऊ दान का फल हासिल होता है।
"	"	"	82	ब्रह्मो कुन्ड	मारूफ बावर जोहड़ी	नं० 81 से द० (S) "	यहां पूजा काशीश्वर महादेव की होती है।	शिवजी की पूजा का फल होता है।
कैथल	सीवन	" कोस	83	डउंक	—	द० S "	सीता बन	पाप दूर हो जाते हैं।
"	"	"	84	स्नान को पाप हरन	साल	प० W "	——— जातरी को चाहिए कि इस तीर्थ में तमाम बाल ——— है की सफाई देकर अस्नान करे।	परम मुक्ति होती है।
53 "	"	"	85	अयापक	सरस दवारे	उ० N "		सुरगबासी होता है।

1	2	3	4	5	6	7	8	9
कैथल	सीवन	1 कोस	86	केशरा भागती	केशरा	पू० E मुतसला	इस तीर्थ में सब बाल मानि ——— करना चाहिए।	रिसी लोक की प्राप्ति होती है।
"	"	4 कोस	87	दशाश्व मेध्य	सह सर —	नं० 83 से जानब दक्षि. मुतसला	और इसको ——— तीर्थ भी कहते हैं।	
"	मांस (मानस)	1 कोस	88	मांख तीर्थ	मान सर	पू० E "	यहां करोज संक्रात सिंह अस्नान आम होता है।	——— दूर जाता है।
54 "	गदली कैथल	1 कोस	89	आपगा	.	प० W 1 कोस	जो कोई इस रास्ता में स्नान करके ब्राह्मणों को तसमई मानि खीर सामख की खिलाके और पिंड दान करने को मुकाबिल गया के समझा जाता है।	पाप से रहत हो ——— आमना प्राप्ति हो और जल दान करने से ——— पीतर तृपत रहते हैं।
"	सीला खेड़ा वाले रक्बा कैथल	" कोस	90 91 92 93 94 95 96 97	[illegible]	.	शुमाल NW (उत्तर) 1 कोस	यहां ब्रह्मा और सप्त ऋषि की पूजा होती है। और नाम ऋषि जैल के हैं। — कश्यप — अत्री — भारद्वाज — गौतम — जमदग्नी (परशुराम जी के पिता) — वशिष्ठ जी (रामचन्द्र जी के) गुरु तथा विश्वामित्र.	ब्रह्म लोक की प्राप्ति और एक रात के रहने से अगले जन्म में राजा हो।

	1	2	3	4	5	6	7		8	9
55	कैथल	कैथल नाखला रवास	1 कोस	98	वृद्ध केदार	.	पू० E		यहां ब्रह्मा-विष्णु ने महादेवजी और सब देवता ओं की पूजा होती है और बाद तवाफ यहां के चर्चिका देवी और चौरिका की पूजा करे।	इसत सिद्धि (अष्टसिद्धि) और शिव लोक की प्राप्ति और श्राद्ध करने से परम पद हासिल होता है।
	"	"	1 कोस	99	विष्णु तीर्थ	इन्दु तीर्थ	द० S	मन्दिर है	यहां सब देवता और विष्णु की पूजा होती है।	विष्णु लोक हासिल होता है।
	"	"	"	100	सर्व देव	मन्दिर है	नं 99 से दक्षिण में	"		सब देवताओं के दर्शनों का फल।
56	"	"	"	101	मंगल कोठ	अगला	उ० N	"	यहां से नौ ग्रह शुरु हुए	मंगल की पूजा का फल और मंगल पीड़ा दूर हो।
	"	"	"	102	राहु	नाला	उ० प० N W	मन्दिर है		राहु की पूजा का फल और राहु की पीड़ा दूर हो।
	"	"	"	103	शनीश्चर	मैदान वाले	उ० प० N W	"		शनीश्चर की पूजा का फल और इसकी पीड़ा दूर हो।
	"	"	"	104	केतु	कुम्हार वाला	उ० प० N W	"		केतु की पूजा का फल और इसकी पीड़ा दूर हो।
57	"	"	"	105	बृहस्पत	दूसरा वाला	उ० N	पाव कोस		बृहस्पत ग्रह की पूजा का फल और इसकी पीड़ा दूर हो।

	1	2	3	4	5	6	7		8	9
	कैथल	कैथल नाखला रवास	1 कोस	106	सूरज कुंड	.	उ० N	मन्दिर है		सूरज की पूजा का फल और इसकी पीड़ा दूर हो।
	"	"	"	107	बुद्ध		उ० N	कोस		बुद्ध ग्रह की पूजा का फल और इसकी पीड़ा दूर हो।
	"	"	"	108	शुक्र		उ० N	मन्दिर		शुक्र ग्रह की पूजा का फल और इसकी पीड़ा दूर हो।
58	"	"	"	109	सोम	कुंड	उ० N	"	यहां नौ ग्रह खतम हुए।	सोम की पूजा का फल और इसकी पीड़ा दूर हो।
	"	"	"	110	अंजनी अस्थान	शाह बुर्जी	प० W	मन्दिर अंजनी का शहर के बाहर पश्चिम तरफ	इस जगह अंजनी जी (माता हनुमान जी की) रहती थी। और असमती नदी अन्दरूम शहर के जारी थी। और दरख्त और मौजूद वहां अंजनी जी और हनुमान जी और रामचन्द्र जी की पूजा करनी है। अब लाला ___ कौम ___ साकिन ___	
59	"	कल तारन	3 कोस	111	कल उतारन	.	उ० N	पाव और (1/4 कोस)		कुल का उद्धार प्राप्ति।
	"	कलसी	"	112	कलसी		पू० E	1 कोस		मुक्त हो जाए।

	1	2	3	4	5	6	7		8	9
60	कैथल	घोर गढ़	तीन कोस	113	सरक	'	उ० N	मुत सिद्ध		मनोकामना पूरी और शिवलोक प्राप्ति हो।
	"	"	"	114	कोटी कोप	'	प० W	"	यह कोटि कूप पहले एक-चाह (कुंआ) हुआ करता था। अब तो ___	___
61	"	"	"	115	ईशस्वद	'	पू० E	"		मुक्ति और मनोकामना सिद्ध हो।
	"	कैथल कोस्वा ढलाल वाले कालवी	—	116	किंदान	वेकरानी	पू० E	1 कोस		सब दान का फल
	"	"		117	किंजप	कालवली	पू० E			सरक जप का फल
62	कैथल	दुर्गाढ खेडी	" कोस	118	धन जलम	'	तरफ द० S.	तरफ पाल कोस	कहते हैं कि नारद मुनि जी ने यहां तपस्या की थी। ___ शिवजी महादेव के उनको दर्शन हुए। जब नारद जी ने कि कहा था कि हमारा धन जलम है। कि यहां दर्शन महाराज के ___ है। इनका ___ इस तीर्थ का नाम धन जलम मशहूर हुआ। यहां पूजा शिवजी ___ की करनी चाहिए।	[illegible] लोक प्राप्ति हो।

	1	2	3	4	5	6	7		8	9
63	कैथल	सोलहड़	3 कोस	119	कोटी कूप	'	प० W	मुत०	यहां के अस्नान से करोड़ तीर्थ ___ का फल मिलता है।	अश्वमेध जग का फल।
	"	कठौत	"	120	नंदतीर्थ	केदार	पू० E	"	यहां करेश्वर महादेव की पूजा करनी चाहिए।	[illegible] दूर हो जाए।
	"	पूंडरी	2 कोस	121	पिंडर्क	गाजाहेडी	पू० N E	पोखाना	यहां पर ___ की पूजा करनी चाहिए।	पन्डरक जग का फल।
	"	तीर्थ	3 कोस	122		टोटक (टीकेश्वर)	उ० N	मुता०		सब पाप दूर हों।
64	कैथल	तीर्थ	3 कोस	123	वैतरणी	'	उ० N	तीन कोह	इन दोनों तीर्थ वैतरणी और ___ शूलपाणी महादेव की करनी चाहिए।	वैतरणी नदी के उतरने से ___ हो जाता है।
	"	साक रह	3 कोस	124	सफरा नदी	'	प० W	मुत सिद्ध		सिद्धि हो जाए।
	"	"	"	125	पाप लोपक	'	प० W	"	यहां शिवजी की पूजा होती है।	पाप दूर हो जाएं।
65	"	फार्ल	5 कोस	126	द्रुमात वती	दुहेड़ा	पू० E	"	यहां पूजा महादेव की होती है। और जिस साल ग्रहण अमावस में हो उस साल जो कोई यहां पिंडदान करे। उसका फल मिसल गया जी का समझा जाता है।	___ जग का फल हासिल हो।

	1	2	3	4	5	6	7	8	9
65	[illegible]	फर्ली	5 कोस	127	सुमहत	सोम तीर्थ	पू. m [illegible]		हजार गौ दान का फल।
	"	"	"	128	पामीयाद	[illegible]	प. W कौन कोस		राजसूय जग का फल।
	"	"	"	129	सूर्जकुंड	"	प. W [illegible]		सूरजलोक की प्राप्ति हो।
66	"	"	"	130	रिसी तीर्थ	"	उ. N "	इस तीर्थ पर तीन रात कयाम करना चाहिए	रिसी लोक की प्राप्ति हो।
	[illegible]	सांप	2 कोस	131	सचीती तीर्थ	"	पू. E [illegible]		स्वर्ग लोक की प्राप्ति हो।
	[illegible]	सिसंग	4 कोस	132	मिसारैक (मिश्रक)	[illegible]	प. W [illegible]		स्वरक तीर्थ का फल हो जाता है।
	"	पासे	2 कोस	133	मनूजी	[illegible]	प. W "	यहाँ देव मुनि मशहूर हैं उनकी पूजा होती है।	मनोकामना सिद्ध होती है।
67	"	"	"	134	कोटी तीर्थ	"	उ. N "	यहाँ तीन रात कयाम करना चाहिए	करोड़ गऊ दान का फल।
	"	"	"	135	चन्द्र कोप	"	ई. NE "		
	"	"	"	136	सूरज कुंड	"	[illegible] SE कौन कोस		सूरज की प्राप्ति हो।

	1	2	3	4	5	6	7	8	9
	[illegible]	कोल	2 कोस	137	तलोतमा	"	S द. [illegible]		[illegible] की लोक की प्राप्ति हो।
68	[illegible]	[illegible]	2 कोस	138	ब्रह्म मोच्यन	"	उ. N [illegible]	यहाँ के मेहताल है	
	"	कोदा	8 कोस	139	काव	"	पू. E [illegible]	यह तीर्थ का है।	काव की दान का फल होता है।
	[illegible]	हैवला (भाला)	2 कोस	140	हव्य	"	द. S [illegible]	यह तीर्थ देवताओं का है।	हव्य दान का फल होता है।
	[illegible]	हाबड़ी	2 कोस	141	सूर्ज कुण्ड	"	पू. E [illegible]		सूरज पीड़ा दूर हो जाए।
69	[illegible]	मोहना	[illegible] कोस	142	मधु नदी	मधु वन	[illegible] N E "	मधु वन यहाँ पूजा देवी मधुमती की होती है।	सिद्धि की प्राप्ति होती है। हजार गौ दान का फल हो।
	"	"	4 कोस	143	कौशकी दृषवती	"	" [illegible]		सब पाप दूर हो जाएं
	"	भेवली (भमोली)	3 को.	144	कौशकी	"	[illegible] E [illegible]		"
	"	"	"	145	दृषवती	"	" [illegible]		"

	1	2	3	4	5	6	7		8	9
70	करनाल	कस्ताली	5 कोस	146	सुदंत कोप	.	पू E	कुं	यहां पूजा ब्रह्मा जी की होती है।	सिद्धि हासिल होने की ———— हो।
	〃	सत्या मट (सीता मढ़ यानि सीतामढ़ी)	3 कोस	147	वेदवती	,	पू० E	〃	इस जगह एक मन्दिर सीता जी का देवताओं के अहद से मौजूद है जिसका दर्शन और पूजा करती हैं। और मूरत सीता जी की वहाँ आरक्षामत हैं।	हजार गौओं के दान का फल।
	〃	कोमद	〃 कोस	148	कौशानी हिर्थ	पर्व तीर्थ	पू० E	〃		अश्वमेध जग का फल।
71	कैथल	दोसेल (दुसैण)	4 कोस	149	शिवल	कुरुक्षेत्र	द० S	मंजलिंग		———— पाप हो जाएं।
	〃	〃	〃	150	अन्नह तीर्थ	[illegible]	द० पू० S E	〃		सूरज लोक की प्राप्ति होती है।
	〃	〃	.	151	गंगा ग्राम दशरथ	.	उ० N	कुं	यहां नदी हिरनवती बरसात में जारी रहती है।	दस रतिया सोने के दान का फल
	पातीनथ	निगदू (निगदू)	5 कोस	152	रुद्रपद गंगा मन्दाकिनी	,	पू० E	〃	इस तीर्थ के स्थान में ———— उसकी पूजा और 3 रोज़ स्नान करें।	सौ अश्वमेध जग का फल।
72	〃	〃	〃	153	कोटि तीर्थ	,	प० W गोआरा उ० N	हरि	यहां कोटेश्वर महादेव की पूजा करते हैं।	कोटि जग का फल।

	1	2	3	4	5	6	7		8	9
	करनाल	बूढ़ ग्राम	5 कोस	154	विहान पदम	पंचायती	द० S	मंजलिंग	यहां बावन जी की पूजा होती है।	सब पाप दूर हों और विष्णु लोक की प्राप्ति हो।
	〃	गोर ग्राम	〃	155	कोटि तीर्थ	,	प० W	कुं	यहां महादेव जी की पूजा होती है।	करोड़ जग का फल
	〃	〃	〃	156	सूर्ज कुंड	.	पू० N E	〃		सूर्ज लोक की प्राप्ति हो।
73	〃	बढ़ ग्राम	〃	157	जमदग्नि आश्रम	मन्दिर	नौसिल S W	〃		सब पाप दूर और ————
	〃	〃	〃	158	कोटि तीर्थ	कोट	पू० E	〃		करोड़ गऊओं के दान का फल।
	〃	बरसत	1 कोस	159	कुल तारन	.	उ० N	〃		कुल का उद्धार और परम पद हासिल हो।
	पेहवा	पचमाना	2 कोस	160	पुन हर्ष	.	पू० E	〃	यहां इस तीर्थ के पश्चिम में पूजा महादेव जी की होती है।	शिव लोक की प्राप्ति हो।
74	〃	चन्दलाना	2 कोस	161	अमरत स्थान	,	द० S	सौम कुंड	यहां पूजा हनुमान जी और ———— अमृत गंगा और सूलपाणी शिव की पूजा	ईश्वर की प्राप्ति होती है।
	पेहवा पानीपत	〃	〃	162	कोप	,	द० S	सौम कुंड		तीर्थ के स्नान का फल और हनुमान जी खुश हों।

1	2	3	4	5	6	7		8	9
थानेसर पेहवा	कोल	2 कोस	163	मन तरन		पू० N E			माता-पिता की कुल का उद्धार हो।
//	कारसा KARSA	//	164	कारिंदे	कल तरन	उ० N			हजार गौओं का दान का फल।
पेहवा	सारसा	4 कोस	165	साली होज	[illegible]	पू० E			जो पाप देह आदि बदन से हो जाते हैं वे दूर हो जाएं
//	व्यास	1 कोस	166	व्यास हर्ष	सूखाया	पू० N E			अश्वमेध जग का फल।
//	//		167	धूत	तीन	पू० E		यहां हर्ष की जानब रास्ता मेह तीर्थ है।	" ——
//	//		168	लोप		उ० N			सब तीर्थों के अस्नान का फल।
//		7 कोस	169	तापन	,	पू० उ० EN	[illegible]		अग्नि स्तोम जग का फल और सूरज लोक की प्राप्ति।
//	कोल पुरा	4 कोस	170	श्रीकंज	,	उ० NE	//		अग्निष्टोम जग का फल।
//	जावन (जौन्ध)	1 कोस	171	मधुकुंड	,	प० & उ० E N	//	इस तीर्थ पर पूजा —— और ——	—— हासिल हो और रिषी लोक की प्राप्ति हो।

1	2	3	4	5	6	7		8	9
पेहवा	कोल पुर	1 कोस	172	नीमष	श्री गंगा	पू० व उ० E N	[illegible]	महातीर्थ इसका जमना —— इस वास्ते श्रीगंगा मशहूर हुआ कि सरस्वती जी में यहां	नीमष तीर्थ के अस्नान का फल।
77 //	बलोती	3 कोस	173	वेदवती	,	प० W	[illegible]	वेदवती कन्या की इस की यहां पूजा होती है।	कन्या जग का फल। सब पाप दूर हों
//	भागा	1 कोस	174	ब्रह्म स्थान	,	प० W	//	यहां ब्रह्मा जी की पूजा होती है।	परम पद हासिल हो।
//	धूम घला	1 कोस	175	सोम तीर्थ	,	पू० E	//	सोम माने चन्द्रमा ——	पितरों का उद्धार परम पद मिले
78 //	मांगला	3 कोस	176	सप्त सारस्वत	,	पू० व उ० E & N	//	इस तीर्थ की जानब शुमाल में एक दरख्त बरगद का है। उसके मुत सिल शिव बराजी है और इन दरख्तों बरगद के पास एक दरख्त सेमल है उसके दरम्यान —— महादेव हैं उनकी पूजा जाहिर।	सात सरस्वतियों की अस्नान का फल और तप करने की ——
//	//	//	177	शिवप्रज (शिवप्राची)		उ० N	कोस कोई		शिव लोक की प्राप्ति हो।

	1	2	3	4	5	6	7		8	9
	पेहवा	मजूरा	2 कोस	178	उसलह	कलायत कैथल	पू० N	मु०	—	सब पाप दूर हों।
79	"	पृथूदक उर्फ पेहवा	1 कोस	179	अगली	,	प० W	"		अग्नि लोक की प्राप्ति हो।
	"	"	"	180	[illegible]	,	"	नीम कोह		मन की शुद्धि हो।
	"	"	"	181	उतंक	,	"	"		सरग लोक की प्राप्ति हो और ऋतंक रिखी के दर्शन का फल
	"	"	"	182	असेरजन	,	"	"		स्वरग लोक की प्राप्ति हो।
80	"	"	"	183	सिन्धु दीप	,	प० W			—
	"	"	"	184	देवापी	,	प० W			तप करने की — हो।
	"	"	"	185	अमनी	,	प० W			अग्निष्टोम जग का फल।
81	"	"	"	186	बिश्वा मित्र	,	प० W			ब्रह्म ज्ञान हासिल हो।
	"	"	"	187	ब्रह्म योनी	,	प० W			ब्रह्म लोक की प्राप्ति हो।
	"	"	"	188	अवकीर्ण	,	प० W			— का फल।
	पेहवा	पृथूदक उर्फ पेहवा	1 कोस	189	बृहस्पति	,	प० W	[illegible]		— लोक की प्राप्ति हो।
	"	"	"	190	पापांतक	[illegible]	प० W	[illegible]		सब पाप दूर हों।
82	"	कस्बा पेहवा	1 कोस	191	पापांतक	[illegible]	प० W	[illegible]		सरग प्राप्ति हो।
	"	"	"	192	मधुस्रवा —	.	प० W	"		पितर तृप्ति हासिल हो (मधुस्रवा वर्तमान मदारसा)
	"	"	"	193	क्षार पावन तीर्थ	[illegible]	प० पू० W N			अश्वमेध जग का फल
	"	"	"	194	रामतीर्थ	.	"	[illegible]		राम लोक की प्राप्ति।
83	"	"	"	195	अग्नि तीर्थ	,	"	"		अग्निष्टोम का फल।
	"	"	"	196	विश्वामित्र	'	"	'	यहां विश्वामित्र की पूजा होती है।	तप की — हो।
	"	"	"	197	वशिष्ठ प्राची	,	"	[illegible]	यहां महादेव के रिखी — — की पूजा होती है।	दुरन दूर हो जाएं।
84	"	उरनाय	3 कोस	198	— उरनाय संगम	,	"	1 कोस	यहां करोड़ तीन रात्रि बहुत बड़ा मेला होता है।	सब पाप दूर हों। और मुक्ति हासिल हो।

	1	2	3	4	5	6	7	8	9
	पेहवा	उस्नाय	3 कोस	199	पहला समुद्र	तीर	द॰ S लगभग		हजार गौ दान का फल
	,,	,,	,,	200	दूसरा समुद्र	·	द॰ S कुं॰		हजार गौ दान का फल
	,,	,,	,,	201	तीसरा समुद्र	तीर्थ [illegible]	औदि S ,,	इस तीर्थ को ——— है सब पाप दूर हो जाते हैं।	हजार गौ दान का फल
	,,	,,		202	चौथा समुद्र	कोल्ह समुद्र	उ॰ N लगभग		,,
85	,,	साहा	1 कोस	203	सहस्रादिक	·	द॰ S ,,		,,
	,,	,,	,,	204	सात मन	/ जोहड़	औदि S W ,,		सौ गऊ दान का फल
	,,	,,	,,	205	सोम	,	प॰ W कुं॰		राजसूय जग का फल
	,,	उरनैचा	·	206	रेणुका	·	औदि S W ,,	यहां रेणुका और जमदग्नि और परसराम इन तीनों की पूजा होती है।	माता की भगती का फल।
86	,,	साहूका (सौंका)	4 कोस	207	ओघन	·	प॰ W कुहस्य (खास)		दान लेने का दोष दूर हो जाए।
	कालका	कोहोर (ओर सहूँदा)	4 कोस	208	सूर्यकुंड	·	ई॰ N E कीलि कोई		सूरज खुश हो।

	1	2	3	4	5	6	7	8	9
	कालका	असनी पुर खेला	4 कोस	209	ओजस तीर्थ	·	प॰ W कुं॰		पाप दूर हों और गया तीर्थ के श्राद्ध के मुताबिक फल
	,,	,,	,,	210	बाराण		प॰ W		सब तीर्थों के अस्नान का फल
87	,,	,,	2 कोस	211	पंचवट	·	प॰ W कुं॰	यहां पूजा शिवजी की चाहिए	———
	,,	थानेसर	6 कोस	212	कुलतीर्थ	आम	आमव H W ,,	यहां ——— और सब देवताओं की पूजा चाहिए।	परम पद हासिल हो।
	,,	,,	,,	213	स्वर्गद्वार	·	,, ,,	यहां ———	सुरग लोक की प्राप्ति हो।
	,,	,,	,,	214	अनर्क	बरगलाहीन	N उ॰ ,,		पाप दूर हों।
88	,,	,,	6 कोस	215	ब्रह्मकूप	·	उ॰ N. लगभग	यहां पूजा नारायण और ब्रह्माजी की होता है।	ब्रह्म लोक हासिल हो।
	,,	,,	,,	216	रुद्रकूप	·	उ॰ N कुं॰	यहां शिवजी की पूजा करते हैं।	महादेव खुश हों।
	,,	,,	,,	217	रुद्रपालि कूप	·	उ॰ N औम कोई	रुद्रपालि ——— महादेवजी की है इसकी यहां पूजा चाहिए।	पार पती जी खुश हों।

1	2	3	4	5	6	7	8	9
कुरुक्षेत्र	कैथल	3 कोस	199	पहला समुद्र	तीर्थ	द० S नागतीर्थ		हज़ार गौ दान का फल
〃	〃	〃	200	दूसरा समुद्र	〃	द० S कुं०		हज़ार गौ दान का फल
〃	〃	〃	201	तीसरा समुद्र	तीर्थ गोशाला	आग्नेय S 〃	इस तीर्थ को ——— से सब पाप दूर हो जाते हैं।	हज़ार गौ दान का फल
〃	〃		202	चौथा समुद्र	चौथा समुद्र	उ० N नागतीर्थ		〃
85 〃	साहा	1 कोस	203	सहस्रांदिक	〃	द० S 〃		〃
〃	〃	〃	204	सादमल	जोहड़	नैऋत्य S W 〃		सौ गऊ दान का फल
〃	〃	〃	205	सोम	〃	प० W कुं०		राजसूय जग का फल
〃	उरसैचा	〃	206	रेणुका	〃	नैऋत्य S W 〃	यहां रेणुका और जमदग्नि और परशुराम इन तीनों की पूजा होती है।	माता की भगती का फल।
86 〃	साहबा (सैंसा)	4 कोस	207	मोचन	〃	प० W सूरजकुंड (ताल)		दान लेने का दोष दूर हो जाए।
शाहबाद	बड़ौर (और सड़ीदा)	4 कोस	208	सूर्यकुंड	〃	ई० N E कोस जोहड़		सूरज खुश हो।

1	2	3	4	5	6	7	8	9
शाहबाद	मखनी पुर रतना	4 कोस	209	ओजस तीर्थ	〃	प० W कुं०		पाप दूर हों और गया तीर्थ के श्राद्ध के मुवाफ़िक फल।
〃	〃	〃	210	वारण		प० W		सब तीर्थों के अस्नान का फल
87 〃	〃	2 कोस	211	पंचवट	〃	प० W कुं०	यहां पूजा शिवजी की चाहिए	———
〃	पानेवा	6 कोस	212	कुलतीर्थ	नाम	वायव्य N W 〃	यहां ——— और सब देवताओं की पूजा चाहिए।	परम पद हासिल हो।
〃	〃	〃	213	स्वर्गद्वार	〃	〃 〃	यहां ———	सुरग लोक की प्राप्ति हो।
〃	〃	〃	214	अनर्क	करमावाली	N उ० 〃		पाप दूर हों।
88 〃	〃	6 कोस	215	ब्रह्मकूप	〃	उ० N नागदेव	यहां पूजा नारायण और ब्रह्माजी की होती है।	ब्रह्म लोक हासिल हो।
〃	〃	〃	216	रुद्रकूप	〃	उ० N कुं०	यहां शिवजी की पूजा करते हैं।	महादेव खुश हों।
〃	〃	〃	217	रुद्रपाति कूप	〃	उ० N भीम जोहड़	रुद्रपति ——— महादेवजी की है इसलिए वहां पूजा चाहिए।	पार्वती जी खुश हों।

	1	2	3	4	5	6	7	8	9
	थानेसर	थानेसर	4 कोस	218	पदम नाथ नाग	,	उ० N नीम छोड़	पदम नाभ नाम विष्णु भगवान का है उनकी यहां पूजा चाहिए	विष्णु जी की पूजा हो।
६१	"	"	8 कोस	219	सरका बन्दी	चौंथा	उ० N "	सर्व देव की यहां पूजा होती है।	परम पद हासिल हो।
	"	कमोधा	5 छोड़	220	काम वन		तरफ द० S कु०	काम वन	मनोकामना सिद्ध हो।
	"	जोसर	2 छोड़	221	जोन हर्ष	,	द० S "		हजार गौ की दान का फल और गीता के माह का फल
	"	भस्नी उर रत्ना हाजरी		222	नर	,	प० द० W S "		इसकी परक्रमा से हजार गौदान का फल
	"	कस्बा थानेसर	"	223	लच्छा तीर्थ	तालाब	पू० E कु०	यहां के पुन करने के लाख गुणा मिलता है	
१०	"	थानेसर	2 छोड़	224	पावन	तालाब	पू०द० ES "		अग्निष्टोम जग का फल
	"	पलोल	1 कोस	225, 226, 227, 228	चौतो दे	,	" तालाब	यह चारों देव स्थान इस नाम से मशहूर हैं	अश्वमेध जग का फल।

	1	2	3	4	5	6	7	8	9
	थानेसर	रामनगर रोड़ी		229	लौकाकी	"	पू० द० S E		अनन्त फल हो।
११	"	थानेसर		230	गंगा हिरदू		पू० द० ES तालाब		सुरग लोक की प्राप्ति हो।
	"	"	"	231	कोटी कोप	,	द० S कुं	यहां पूजा शिवजी महाराज की होती है। यह कूप इसलिए जिस में तीन करोड़ तीर्थ हैं।	कुल का उद्धार हो सब तीर्थों का फल
	"	"	"	232	अपरना	,	द० S "	यहां पूजा शिव जी और गंगा की होती है।	कुल का उद्धार हो
	"	"		233	अविम	,	पू० उ० EN तालाब		आर्य लोक की प्राप्ति हो।
१२	"	"	1 कोस	234	ब्रह्म योनी	,	उ० N "		ब्रह्म लोक की प्राप्ति हो।
	"	"	1 कोस	235	कोदवर	,	" "		पद हासिल हो।
	"	"	"	236		,	" "		फल हासिल हो।
	"	"	"	237	दुर्गा तीर्थ	,	" "	यहां दुर्गा जी की पूजा होनी चाहिए।	
१३	"	"	"	238	काल परासी	,	उ० पू० NE "	यहां तीन रात रहना चाहिए	सब पाप दूर हों।

1	2	3	4	5	6	7	8	9
पानीपत	[illegible]	1 कोस	239	शुक्र तीर्थ	•	ई.3४ EN		परम गत हासिल हो।
॥	॥	॥	240	चित्रमुख	•	॥	यह तीर्थ चतरमुखी ब्रह्मा की है।	केवल ब्रह्मलोक पैदा हो।
॥	॥	॥	241	चक्र तीर्थ	•	॥	यहां विष्णु जी की पूजा और एक रात रहना चाहिए।	बारह बरस की तप का फल। गोमती चक्र तीर्थ के अस्नान का फल हो।
॥	॥	॥	242	वशिष्ठ प्राची	[illegible]	॥	यहां इस तीर्थ पर भी तीन रात रहना चाहिए।	बारह बरस की तप का फल।
॥	॥	॥	243	इन्द्र तीर्थ	•	उ. N		इन्द्र लोक की प्राप्ति हो।
॥	॥	॥	244	राम तीर्थ	•	उ. N		सब जग का फल।
॥	॥	॥	245	यमना				जमना जी की अस्नान का फल।
॥	॥	॥	246	एकरात				ब्रह्म लोक की प्राप्ति हो।
॥	॥	॥	247	चीर का तास				अश्वमेध जग का फल।
पानीपत	[illegible]		248	आदत	[illegible]		यहां इस तीर्थ पर ____ की पूजा होती है।	____ लोक की प्राप्ति हो।
॥	॥	॥	249	सोम प्राची (सूम)				सोमलोक की प्राप्ति हो।
॥	॥	॥	250	सारस्वत				____ जग का फल और सरस्वती लोक की प्राप्ति हो।
॥	॥	॥	251	सर्व तीर्थ				
॥	॥	॥	252	ब्रह्म स्थान			यहां भी तीन रात रहना चाहिए।	ब्रह्मा लोक की प्राप्ति हो।
॥	॥	॥	253	रुद्र लिंग			यहां इस तीर्थ पर एक दरख्त बरगद और लिंग महादेव का है। उनकी पूजा होती है।	तीर्थ का मुताबिक फल होता है।

समापन तिथि — 1-11-2011 सवेरे 11 बजे [illegible]।